International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

गुप्तकालीन समाज में वर्णित नारियों की सामाजिक एवं आर्थिक दशायें : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

धीरेन्द्र सिंह
शोध छात्र
प्राचीन इतिहास संस्कृति, एवं पुरातत्व विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्राचीन भारतीय मनीषा में नारी का स्थान सदैव सर्वोपरि रहा है फिर भी एक विश्लेषणात्मक झलक की आवश्यकता है। नारी न केवल पुरूष को पूर्णत्व प्रदान कराती रहीं है। अपितु सृजन का आरम्भ बिन्दु बनकर इतिहास के साथ–साथ समस्त मानव जाति को दिशा व नूतनता की ओर उद्वेलित भी कराती रही है। नारी का आरम्भ स्वरूप सृजनशीलत, उर्वरता की देवी के रूप में होकर सतत प्रवाहमान जीवन की ओर प्रयास करता हुआ दिखाई देता है। नारी संस्कृत वाङ्मय में केवल विषयवस्तु ही नहीं रही अपितु विषय वस्तु को रचने वाली व उसमें जीवन्तता लाने वाली, उसे गति देने वाली व वाहिकाओं के रूप में भी कार्यरत रही है। नारी जीवन केवल नवउमंग, नवउल्लास, नवसौन्दर्य व नवसृजनशीलता के अलावा ज्ञान प्रदीप, नवोन्मेषण, वेदविद्या की विशारद भी रहती है। गार्गी, अपाला, घोषा, विश्ववारा, सिक्ता अन्य स्त्रियों के उद्धरण भरे पड़े हैं। जिन्होंने न केवल प्राचीन मनीषा की दशा व दिशा को बदली अपितु उसे सर्वोच्चता के उत्तुंगु शिखर तक पहुँचाने का श्लाघनीय प्रयास किया है।

प्राचीन काल से हिन्दू समाज में स्त्री का सम्मान और आदर होता चला आ रहा था। स्त्री समाज की आधारशिला है। वे अपना मनोनुकूल आत्मविकास और उत्थान कर

सकती थी। पुरूष के व्यक्तित्व का अंकुरण माता के अंक में ही है। वही उसका प्राथमिक एवं सर्वप्रथम शिवालय है। परिवार और समुदाय में उनके द्वारा कन्या, पत्नी, वधू और माँ के रूप में किये जाने वाले योगदान का सर्वथा महत्वपूर्ण और गौरवपूर्ण स्थान रहा है। धर्मशास्त्रों में नारी सर्व–शक्ति सम्पन्न मानी गयी है तथा ममता, यश और सम्पत्ति की प्रतीक समझी गई है। धीरे–धीरे समाज में उसका महत्व अधिक बढ़ा कि उसके बिना अकेला पुरूष अपूर्ण और अधूरा समझा गया। यदि माता पुरूष के चरित्र की संपौषण भूमि है तो पत्नी उसके विकास के हेतु प्रस्तर–स्तम्भ। पत्नी के रूप में स्त्री–पुरूष के सुख–दुखः, आशा–निराशा, उत्थान–पतन आदि द्वंदों में चिर–हवर साहचर्य देती हुई जीवन के सम–विषम पथ पर उसके साथ निरन्तर गति में चलती हुई उसके प्रसाद–अभिशापों की सहभाजिनी बनी रहती है। उसकी सामाजिक स्थिति में सम्पूर्ण समाज प्रभावित होता है। बहुधा देखा गया है कि उसकी उन्नति–अवनति का इतिहास समस्त समाज की उन्नति–अवनति का इतिहास बन जाता है। इस दृष्टि से स्त्री समाज का माप–दण्ड है। उसके सामाजिक मूल्य से सम्पूर्ण समाज का मूल्यांकन किया जा सकता है। यही कारण है कि स्त्री–समाज का इतिहास अपना एक विशिष्ट महत्व रखता है। भारतीय इतिहास में यह विषय स्त्री के विकास–ह्रास, प्रतिष्ठा, संघर्ष–विघर्ष एवं उदय–विलय की एक लम्बी कहानी है जिसमें हमारे सामाजिक इतिहास में विविध मधुर एवं कटु सत्य निति है।

गौरवशाली एवं उन्नत प्राचीन भारतीय संस्कृति को भूला आज का मानव आधुनिक होने का दंभ भरता है। प्राचीन शब्द सुनते ही मस्तिष्क में रूढ़िवादिता,

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

आडम्बर, निरवरता, सामाजिक बन्धनों की जकड़न व घुटन का अहसास होने लगता है। परन्तु यदि प्राचीन संस्कृति के उपलब्ध साक्ष्यों पर दृष्टिपात करते हैं तो भारतीय साहित्य में नारी की उन्नत स्थिति उनकी विद्वता, उच्च शिक्षा व भ्रष्ट कार्यों का विशद वर्णन मिलता है।

प्राचीन भारत में नारी व पुरूष में कोई भेदभाव न था। उसकी स्थिति पर्याप्त थी, उन्नत थी, पुरूषों के समान नारी विद्याध्ययन, हवन–पूजन तथा साहित्य व सेवा समाज के उत्थान में अपना योगदान देती थी। ब्राह्मण, बौद्ध–जैन, साहित्य आदि में सैकड़ों, नारियों के नामों का उल्लेख है जो वेद, दर्शन, तर्क, मीमांसा, वार्ता साहित्य, ललित कलाओं (नृत्य, संगीत, चित्रकला) तथा व्यवहारिक शिक्षा आदि विषयों की प्रकांड विद्वान थी।

नारी शिक्षा के भी दो रूप थे, अध्यात्मिक एवं व्यावहारिक पुराणों वायु पुराण, विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण के अनुसार अपूर्ण, भुवना, एकमर्ण, एक्माटला, मेना, धारिणी। संनति, शतक्ष्पा आदि आध्यात्मिक ज्ञान में निपुण ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ थी। उमा, पीवरी, धर्मव्रता आदि ने तम के द्वारा मनोनुकूल वर वाया–

'एतेष पीवरी कन्या मनसी दिविविश्रुता।

योगगनी ययोगमाता व तपश्च के सुदारूणम।।

शून्य कन्याओं को अध्ययन की कोई व्यवस्था नहीं थी और उनके अध्ययन करने के प्रमाण गुप्तकाल में नहीं मिलते। साधारणतः प्राचीन–काल से ही उनके उपनयन, अध्ययन आदि वर्जित थे। ब्राह्मण कन्याओं को तो पिता और पति दोनों के घरों में

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

अध्ययन के अवसर होते थे और राजश्रिता तथा अभिजात कुलीनों के लिए महलों में ही अध्ययन की व्यवस्था हो जाया करती थी। वात्स्यायन का कहना है कि नारियों को 64 आविद्याओं का अध्ययन करना चाहिए। गुप्तकालीन, ''अमरकोष, नारी, उपाध्या और वैदिक मंत्रों की शिक्षिका ''आचार्य'' का उल्लेख करता है।

''पुराकत्वै कुमारीणं मैजीवंधनमिष्यते।

अध्ययन च वेदानां सावित्री वाचनं तथा।।

गुप्तकालीन स्त्रियाँ यद्यपि स्वतन्त्र जीवन जीती थी, फिर भी उनकी कुछ गतिविधियाँ थी, स्त्रियाँ बंधनमय थी, स्त्रियाँ बिना पर्दा किये घूम–फिर सकती थी परन्तु अजनबी व्यक्तियेां से अनर्थक वार्तालाप करने का अधिकार उन्हें प्राप्त नहीं था। पति के साथ कहीं भी जा सकती थी। अविववाहित विधवाओं पर कुछ सामाजिक बंधन थे। ऐसी स्त्रियाँ अकेले बाहर नहीं निकलती थी।

गुप्तकाल में पर्दे का रूप अनजाना था, यद्यपि घर में स्त्रियों के रहने का स्थान पुरूषों से अलग था। रजवाड़ों में जहाँ वे रहती थी, महल के उस भाग को अन्तपुर, अवरोध अथवा शद्धांश कहते थे। स्त्रियाँ जब बड़ों के सामने, विशेषकर अपने पति के साथ निकलती थी तब लाज के उपचार से उनसे आशा भी की जाती थी कि वे अपना मुंह ढ़क लेगी। कालिदास के अनेक ग्रंथों में अवगुंठन का उल्लेख हुआ तथा शाकुन्तलम्, नाटक से ज्ञात होता है कि शकुन्तला जब दुष्यन्त की राजसभा में जाती है तब अपेन मुंह पर अवगुंठन डाले रहती है, और जब पहचाने जाने की आवश्यकता पड़ती है तब अवगुंठन हटा लेती है। 'मृच्छकटिक' में जैसे ही वसन्त सेना (वेश्या) वधू

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

का पद प्राप्त करती है तब अपना मुंह ढक लेती है। वस्तुतः यह ऊपर कहा जा चुका है कि पर्दा मात्र लज्जा का उपचार था, करना नदी में स्नान करते समय जल पीट–पीटकर मृदगंध्वनि उत्पन्न कर गाती, अथवा विवाहादि के अवसरों पर स्वच्छन्द गाती स्त्रियों में पर्दा का होना कैसे संभव हो सकता था? गुप्तकाल की कला–कृतियों में नारी प्रतिमाओं के ऊपर किसी प्रकार के पर्दे का आवरण नहीं है? बल्कि उनका ऊपरी भाग सर्वथा खुला रहने से कुछ लोगों ने उसका यह भी अर्थ लगाया है कि स्त्रियाँ तब कमर से ऊपर पहनती ही नहीं थी। यह भी गलत है क्योंकि गुप्तकालीन कवि कालिदास ने उनकी चोली, कंचकु, स्तनांशूक आदि का प्रयोग किया है। वाणभट्ट रचित 'हर्षचरित' में अवगुंठन करने का वर्णन है तथा राज्य श्री द्वारा अपने पति के सन्मुख आवरण करने का संकेत है।

गुप्तकाल में अभिसारिकाओं अथवा नर्तकी स्त्रियों का अस्तित्व था। उनका उपयोग जन्म आदि अवसरों, मंदिरों में गाने नाचने के लिए होता था। महाकवि कालिदास ने उज्जयिनी के महाकाल के मंदिर में चंवर धारिणी नर्तकियों के नृत्य का स्पष्ट वर्णन किया है। ये यद्यपि वेश्वाएं ही होती थी, परन्तु ईश्वर की अराधना वादन, गायन एवं नर्तन आदि भक्ति भाव से करती थी। मन्दिर के लिए सुन्दर–सुन्दर कन्याएँ खरीदी जाती थी। भविष्य पुराण में वर्णित है कि सूर्यलोक विजय का एकमात्र उपाय यही है कि बहुत सी वेश्याओं को सूर्य मंदिर में समर्पित करने की मनौति मांगती थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग भी अपने यात्रा वृतान्त में सिंध के एक सूर्य मंदिर में नियुक्त नर्तकियों का उल्लेख करता है। गणिकाओं के सम्बन्ध में 'कामसूत्र' में कहा गया कि

रूप और विविध गुणों से सम्पन्न होने के कारण उनका समाज में विशेष स्थान था। गणिकाओं की कथाओं में उनकी मानवता, सहृदयता एवं कोमलता के साथ ही उनकी क्रूरता, धूर्तता, भद्रता, धन लोलुपता और विश्वासघात का पता चलता है। परवर्ती, साहित्य में इनके कई नाम प्रचलित हुए नर्तकी, रूपाजीवा, वेश्या, वारांगना, देवदासी आदि। इनमें देवदासियां मंदिर की सेवा करती थी। साहित्यिक अनुश्रुति है कि स्वयं कालिदास को वेश्या के कुचक्र से मृत्यु का शिकार होना पड़ा है।

निष्कर्षतः गुप्तकाल में नर्तकियों की स्थिति उच्च एवं सम्मानित थी। इनका महत्व विलासिता की दृष्टि से तो था ही साथ ही धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से भी इनका महत्व था। गणिकाओं का उपयोग गुप्तचरों के रूप में किये जाने से इनका राजनीतिक महत्व भी कम नहीं था।

****

संदर्भ सूची

1. मजमूदार, राय चौधरी : भारत का वृहद इतिहास तीसरा संस्करण, ताज प्रेस नई दिल्ली

2. विष्णु पुराण : 1889, विल्सन, 5 भाग लन्दन, गीता प्रेस, गोरखपुर, सं0 2009

3. शालातोर, आर0एन0 : लाइफ इन दी गुप्त एज मुम्बई, 1943

4. पुराण परिशीलन : राका प्रकाशन, इलाहाबाद

5. अल्तेकर ए0एस0 : द पोशीजन आफ वीमेन इन हिन्दू, सिविलाइजेशन, बनारस, 1956

6. कालिदास : निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, 1927 अभिज्ञान शाकुन्तलम्, चौखम्भा संस्कृत सीरीज मेघदूत, मालिकविकाग्निमित्र, बम्बई संस्कृत च सीरीज, 1901

7. राय, यू0एन0 : गुप्त सम्राट और उनका काल, नवां संस्करण 2012 लोकनाथ भारती, इलाहाबाद

8. फ्लीट, जे0एफ0 : गुप्त इन स्क्रीपशन्स आफ कापर्स इनस्क्रीपशन्स, इन्डीकेरम।

9. मिश्र, जय शंकर : प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।